दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 05.08.2022

प्रकाशनार्थ

'नो फर्स्ट यूज' भारत की परमाणु नीति का अखण्ड भाग है-प्रो. श्याम कुमार सिंह

दिनांक 05.08.2022 गोरखपुर। द्वितीय विश्वयुद्ध के अन्तिम दौर में 06 अगस्त 1945 को अमेरिका ने जापान के नागासाकी शहर पर विश्व का पहला परमाणु बम गिराया जिसमें लाखों लोगों की मृत्यु हो गई तथा कई पीढ़ियों तक उसका दुष्परिणाम नागासाकी के लोग झेलते रहे। तदुपरांत विश्व में परमाणु बम बनाने की होड़ प्रारम्भ हो गयी। इसके बाद सोवियत संघ ने 1949 में, ब्रिटेन ने 1952 में, फ्रांस ने 1960 में तथा चीन ने 1964 में परमाणु परीक्षण कर लिए, जिससे परमाणु भयादोहन की स्थिति उत्पन्न हो गई। परमाणु बमों की होड़ को कम करने के लिए महाशक्तियों ने पी.टी.बी.टी. तथा एन.पी.टी. समझौता किया जिसे संयुक्तराष्ट्र की महासभा ने भारी बहुमत से स्वीकार कर लिया परन्तु भारत सहित पाकिस्तान, इजराइल ने इस संधि पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया क्योंकि यह संधि भेदभाव पूर्ण संधि थी। 1998 में भारत ने अपना दूसरा परमाणु परीक्षण कर खुद को परमाणु संपन्न देश घोषित किया और किसी भी देश पर चाहे वह परमाणु संपन्न हो या ना हो **'पहले परमाणु शस्त्र का प्रयोग न'** करने की घोषणा की। लेकिन परिवर्तित अन्तर्राष्ट्रीय विश्व व्यवस्था में भारत के समक्ष उत्पन्न सुरक्षा चुनौतियों के मद्देनजर भारत को अपने इस नाभिकीय सिद्धान्त पर पुनः विचार करने की आवश्यकता महसूस हो रही है।

उक्त बातें दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय में रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग द्वारा **हिरोशिमा नागासाकी जनसंहार : भारतीय सुरक्षा एवं रणनीतिक विकल्प विषय पर हिरोशिमा दिवस की पूर्व संध्या पर बतौर मुख्य अतिथि प्रो. श्याम कुमार सिंह प्राचार्य, पवित्रा डिग्री कालेज, मानीराम, गोरखपुर** ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कही।

अपने **अध्यक्षीय उद्बोधन में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओमप्रकाश सिंह** ने कहां की द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका ने जापान पर बदले की भावना से परमाणु बमों का प्रयोग किया। विश्व में जापानी और इजराइली ही ऐसे हैं जो राष्ट्रीय चरित्र को प्राथमिकता देते है । भारत ने अपने नाभिकीय सिद्धान्त 'नो फर्स्ट यूज' के माध्यम से पूरी दुनिया को अपने राष्ट्रीय चरित्र से अवगत कराया वर्तमान में भारत ने एक 'साफ्ट पावर' के रूप में अपनी छवि स्थापित की है किन्तु भारत की नीति गतिशील है जो परिस्थितियों के अनुसार अपनी नीतियों में परिवर्तन करने में सक्षम है।

कार्यक्रम का संचालन विभाग के प्रभारी डॉ. राम प्रसाद यादव ने किया और स्वागत विभाग के शिक्षक डॉ शुभ्रांशु शेखर सिंह ने किया इस उपलक्ष्य में विभागीय शिक्षक विकास कुमार पाठक एवं विभागीय छात्र एवं छात्राएं उपस्थित रहे।

उक्त जानकारी महाविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ शैलेश कुमार सिंह ने दी।

डॉ.(शैलेश कुमार सिंह)
प्रभारी
सूचना एवं जनसम्पर्क